बी॰ए॰ भाग-3
हिन्दी-प्रतिष्ठा
पेपर-7
'मध्य भारतीय आर्य भाषा'

रमेश कुमार यादव
हिन्दी-विभाग
डी॰ के॰ कालेज
डुमरॉव, बक्सर

मध्य भारतीय आर्य भाषा-

500 ई॰ पू॰ से 1000 ई॰ पालि

मध्य भारतीय आर्य भाषा-काल को प्राकृत काल भी कहते हैं। इसके तीन स्पष्ट स्तर हैं-

(क) प्रथम प्राकृत - (500 ई॰पू॰ से ई॰ सन् के आरम्भ तक) पालि, अशोक के अभिलेख।

(ख) द्वितीय प्राकृत (ई॰ सन् के आरम्भ से 500 ई॰ तक) साहित्यिक प्राकृतें महाराष्ट्री आदि।

(ग) तृतीय प्राकृत (500 ई॰ से 1000 ई॰ तक) अपभ्रंश।

प्राकृत भाषा की उत्पत्ति को लेकर विद्वानों में मतभेद है। इस सम्बन्ध में तीन मत उपस्थित किये गये हैं-

[1] संस्कृत से प्राकृत की उत्पत्ति हुई है। जैसा हेमचन्द्र ने कहा है—

प्रकृतिः संस्कृतम्। तत्र भवं तत आगतं वा प्राकृतम्। अर्थात् संस्कृत मूल है और उससे जो उत्पन्न हुई उसे प्राकृत कहते हैं। इस मत के अनुसार संस्कृत में रूप-परिवर्तन होने से प्राकृत की उत्पत्ति हुई।

[2] दूसरा मत यह है कि प्राकृत का ही संस्कार कर संस्कृत का निर्माण हुआ। इसकी पुष्टि स्वयं संस्कृत शब्द से होती है। जिसका संस्कार हुआ हो वह संस्कृत। इस मत के समर्थक कहते हैं- प्रकृत्या स्वभावेन सिद्धम् प्राकृतम् अर्थात् जो स्वभाव-सिद्ध हो वह प्राकृत है। तात्पर्य कि स्वाभाविक, सहज या साधारण भाषा प्राकृत है।

जब तुलसीदास ने 'कीन्हे प्राकृत जन गुन गाना' कहा तो प्राकृत शब्द का प्रयोग साधारण के अर्थ में ही किया।

[3] तीसरा मत यह है कि न तो संस्कृत से प्राकृत उत्पन्न हुई न प्राकृत से संस्कृत। दोनों का पृथक्-पृथक् स्वतन्त्र रूप में विकास हुआ। संस्कृत के समानान्तर जो जन-भाषाएँ थीं, उन्हीं का विकसित रूप प्राकृतें हैं।

निश्चयात्मक सामग्री के अभाव में इन तीनों में से किसी एक मत को स्वीकार करना कठिन है, पर सी तीसरा मत ही अधिक समीचीन प्रतीत होता है।

प्रथम प्राकृत के रूप में पालि का निर्देश हुआ है। पालि शब्द का अर्थ क्या है और वह कहाँ की भाषा थी, इन दोनों प्रश्नों को लेकर एकमत्य नहीं है। पालि शब्द की निरुक्ति को लेकर अनेक कल्पनाएँ की गयी हैं— पंक्ति शब्द के निम्नलिखित विकास-क्रम से पालि की निष्पत्ति बतायी जाती है।

पंक्ति > पंति > पत्ति > पट्ठि > पल्लि > पालि।

पल्लि (गाँव) से पालि को निष्पन्न बताया जाता है - पल्लि-भाषा अर्थात् गाँव की भाषा। एक विद्वान् ने पाटलिपुत्र शब्द से पालि को व्युत्पन्न करने का प्रयास किया है। उनका कथन है कि ग्रीक में पाटलिपुत्र को पालिबोथ्र कहते हैं।

पालि की कतिपय विशेषताएँ

(1) वैदिक ध्वनियों में से ऋ, ॠ, ऌ, ऐ, औ, श ष और विसर्ग का पालि में लोप पाया जाता है। ऋ के स्थान पर अ, इ या उ का प्रयोग मिलता है।

(2) वैदिक क और क्ष ध्वनियाँ पालि में संरक्षित हैं जो संस्कृत में लुप्त हो गयी है।

(3) ऐ औ के बदले पालि में क्रमशः ए और ओ मिलता है: जैसे - कैलाश > केलाश, वैदेह > वेदेह, गौतम > गोतम, औषध > ओषध।

(4) दीर्घ ए ओ के साथ ह्रस्व ऍ ऑ का विकास है

(5) अघोष वर्ण का घोष में परिवर्तन होता है, जैसे क का ग, शाकल > सागल, चकाज, सुच > सुजा

अशोक के अभिलेख के अध्ययन से स्पष्ट ज्ञात होता है कि पालि में भी स्थान-भेद से भेद हो गये थे। पाँच प्रकार के भेद दिखायी पड़ते हैं- पश्चिमी, उत्तर-पश्चिमी, मध्यदेशीय, पूर्वी और दक्षिणी। पालि का महत्व बौद्धमत की हीनयान शाखा के माध्यम के रूप में बहुत बड़ा है। अशोक के अभिलेखों को लेकर उसका ऐतिहासिक महत्व भी अनल्प है।

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट - प्रोफेसर
हिन्दी - विभाग
डी. के. कालेज, डुमरॉव।